क्या पाया क्या छोड़ा | by Namrata Kushwah

हनुमान तेरी कृपा का भंडारा चल रहा है
हर और घना अँधेरा मेरा दीप जल रहा है
कोई रहा ना बेबस ना कोई अभागा
तूने दिया भगत को किस्मतो से ज्यादा

सुध बुध खोई मैंने मन हनुमान से जोड़ा
अब काहे मैं सोचूं क्या पाया क्या छोड़ा

सूखे में सावन सा तू कश्ती तूफानों की
गिनती ना हो पाए तेरे एहसानो की
भक्तों ने जब भी पुकारा तू आया दौड़ा दौड़ा
क्या पाया क्या छोड़ा.....

जो भी हनुमान को पूजे और चाहे सच्चे मन से
कोसो दूर है रहता दु:ख उसके जीवन से
सबने दु:ख में छोड़ा पर तूने मुख ना मोड़ा
क्या पाया क्या छोड़ा.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%9b%e0%a5%8b%e0%a4%a1%e0%a4%bc%e0%a4%be-by-namrata-kushwah/